बाईस

आत्मा द्वारा कैसे नेतृत्व होना है

How to Be Led by the Spirit

यूहन्ना का सुसमाचार विश्वासियों के जीवन में पवित्र आत्मा की भूमिका के संबन्ध में यीशु द्वारा की गई अनगिनत प्रतिज्ञाओं का विवरण देता है। आइये उनमें से कुछ का अध्ययन करें :

> और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा (यूहन्ना 14:16-17)।
>
> परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा (यूहन्ना 14:26)।
>
> तौभी मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा...मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं; परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा (यूहन्ना 16:7,12-15)।

यीशु ने अपने शिष्यों से प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा उनमें वास करेगा। वह उनकी सहायता करेगा, उन्हें सिखाएगा, उनका मार्गदर्शन करेगा और आने वाली बातें उन्हें बताएगा। आज मसीह के शिष्य होने के कारण, हमारे पास यह विचार करने का कोई कारण नहीं है कि पवित्र आत्मा हमारे लिये इससे कम करेगा।

अजीब बात है, यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि यह उनके लिए भला ही होगा कि वह जाए, अन्यथा पवित्र आत्मा नहीं आएगा। यह उनके लिए इस बात का संकेत था कि पवित्रशास्त्र के साथ उनकी सहभागिता इतनी घनिष्ठता की हो सकती है कि मानो यीशु शारीरिक रूप से उनके साथ हो। नहीं तो यीशु के बिना पवित्र आत्मा के उनके साथ रहने का कोई लाभ नहीं होगा। पवित्र आत्मा के द्वारा ही यीशु हममें और हमारे साथ-हमेशा रहता है।

किन तरीकों से हमें पवित्र आत्मा से हमारा नेतृत्व किये जाने की अपेक्षा करनी चाहिए?

उसका नाम *''पवित्र आत्मा''* यह संकेत देता है कि हमारा नेतृत्व करने में उसकी प्राथमिक भूमिका हमारे पवित्र होने और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने में होगी। इसलिए पवित्रता से संबन्धित प्रत्येक चीज़ और पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा का पूरा होना पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के क्षेत्र में आता है। वह मसीह के साधारण आदेशों का पालन करने के साथ-साथ मसीह के विशिष्ट आदेशों का पालन करने में भी हमारा नेतृत्व करेगा, जिसका संबन्ध उस अद्वितीय सेवकाई से है जिसके लिये परमेश्वर ने हमें बुलाया है। इसलिए यदि आप अपनी विशिष्ट सेवकाई के संबंध में आत्मा का नेतृत्व चाहते हैं तो आपको सामान्य पवित्रता में भी आत्मा के नेतृत्व में चलना होगा। आपके लिए दोनों का होना ज़रूरी है। बहुत से प्रभु के सेवक चमत्कारों इत्यादि में आत्मा की अगुवाई तो चाहते हैं लेकिन सामान्य पवित्रता के ''छोटे'' पहलुओं की वे चिन्ता नहीं करते। यह एक बहुत बड़ी गलती है। यीशु ने अपने शिष्यों का नेतृत्व कैसे किया? प्रार्थना के रूप से उन्हें पवित्रता के सामान्य निर्देशों को देते हुए। सेवकाई उतरदायित्वों के लिए उसका नेतृत्व उनके लिए बहुत कम ही था। अत: यह उस पवित्र आत्मा के द्वारा होता है जो हम में वास करता है। इसलिए यदि आप अपने लिए आत्मा के नेतृत्व को चाहते हैं तो आपको सबसे पहले पवित्र होने के लिए उसके नेतृत्व में चलना होगा।

प्रेरित पौलुस ने लिखा ''इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं'' (रोमि. 8:14)। यह आत्मा द्वारा चालित हमारा अस्तित्व ही है जो हमें परमेश्वर भी संतानों के बीच रखता है। अत: परमेश्वर की सभी संतानों का नेतृत्व आत्मा के द्वारा किया जाता है। यह हम पर निर्भर करता है कि आत्मा की अगुवाई का पालन करें।

यदि ऐसा है तो किसी भी मसीही को यह सिखाने की ज़रूरत नहीं है कि आत्मा

के नेतृत्व में कैसे चलें, क्योंकि पवित्र आत्मा पहले से ही प्रत्येक मसीही की अगुवाई कर रहा है। दूसरी ओर, शैतान परमेश्वर की संतानों को पथभ्रष्ट करने का प्रयास कर रहा है, और हममें अभी भी वही पुराना शारीरिक स्वभाव पाया जाता है जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध चलने को हमें उकसाता है। इसलिए विश्वासियों को उन नेतृत्वों से अलग आत्मा के नेतृत्व को पहचानने की ज़रूरत है। यह परिपक्वता के मार्ग पर चलनेवाली प्रक्रिया है। लेकिन आधारिक सच्चाई यह है: आत्मा परमेश्वर के वचन की रेखा में ही हमारी अगुवाई करेगा, और वह हमारा हमेशा उसे करने में नेतृत्व करेगा, जो सही और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला होगा, जिससे उसे महिमा मिले (देखें यूह. 16:14)।

पवित्र आत्मा की वाणी

The Voice of the Holy Spirit

यद्यपि पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि पवित्र आत्मा कई बार दर्शनीय मार्गों में हमारी अगुवाई कर सकता है, जैसे दर्शनों, भविष्यवाणी या परमेश्वर की श्रव्य आवाज़ के द्वारा। पवित्र आत्मा का सबसे अधिक व्यवहार करने का सामान्य तरीका हमारी आत्माओं पर ''छाप'' डालना है। अर्थात्, यदि आत्मा हमसे कुछ कराना चाहता है, तो वह हमारी आत्माओं से जुड़ जाएगा और हम एक विशिष्ट मार्गदर्शन में चलने की एक अगुवाई का अनुभव करेंगे।

हम अपनी आत्मा की आवाज़ को ''विवेक'' कह सकते हैं। सभी मसीही अपने विवेक की आवाज़ को पहचानते हैं। यदि हम पाप से आकर्षित होते हैं, हम अपने भीतर स्वयं से यह कहते हुए आवाज़ को नहीं सुनते, ''इस परीक्षा में मत पड़'' इसके विपरीत हम अपने भीतर किसी चीज़ को उस परीक्षा से *सामना* कर पाते हैं और परीक्षा में पड़कर पाप करने पर हम इस आवाज़ को स्वयं से यह कहते हुए नहीं सुनते, ''तुमने पाप किया है। तुमने पाप क्या है।'' हम केवल अपने भीतर एक अपराध भावना का अनुभव करते हैं, जो पश्चात्ताप की ओर ले जाते हुए पाप का अंगीकार करने में हमारा नेतृत्व करती है।

इसी तरह से आत्मा सामान्य सत्य और समझ को सिखाने के साथ-साथ उसमें हमारी अगुवाई भी करेगा। वह हममें एक प्रकाशन को डालने के द्वारा हमें शिक्षा देगा उन प्रकाशनों को किसी दूसरे को बताने में दस मिनट का भी समय लग सकता है लेकिन वे पवित्र आत्मा के द्वारा कुछ ही क्षणों में भी आ सकते हैं।

इसी तरह से पवित्र आत्मा सेवकाई के कार्यों में भी हमारी अगुवाई करेगा। हमें उन भीतरी नेतृत्वों और छाप के प्रति संवेदी होने के लिए एक विवेकपूर्ण प्रयास करने की ज़रूरत है और हम सेवकाई से संबन्धित चीज़ों में आत्मा का अनुसरण करना (परीक्षा और गलती के द्वारा) धीरे-धीरे सीखेंगे। ऐसा तब होता है जब हम अपने

मस्तिष्कों (अपनी विवेकी या अविवेकी विचारधारा) को अपने हृदय के मार्ग से कार्य करने की अनुमति देते हैं जिसमें हम स्वयं को परमेश्वर की इच्छा के विरोध में गलतियां करता पाते हैं।

आत्मा ने यीशु का नेतृत्व कैसे किया

How the Spirit Led Jesus

यीशु का नेतृत्व पवित्र आत्मा द्वारा भीतरी छाप के द्वारा किया गया था। उदाहरण के लिये, मरकुस का सुसमाचार इस बारे में बताता है कि यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा दिये जाने पर उसके पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के पश्चात् क्या हुआ:

> तब आत्मा ने तुरन्त उसको जंगल की ओर भेजा (मर. 1:12)।

जंगल में जाने के लिए यीशु ने न तो कोई आवाज़ सुनी और न ही उसे कोई दर्शन मिला– उसे केवल वहां भेजा गया था। पवित्र आत्मा सामान्यता इसी तरह से नेतृत्व करता है। वह हममें किसी विशिष्ट चीज़ को करने के लिए निकट आने, नेतृत्व करने, दोष-भावना का भाव देगा।

जब यीशु ने इस पक्षाघात के रोगी से जिसे छत से नीचे उतारा गया था, यह कहा कि तेरे पाप क्षमा किये गए हैं, वह जानता था कि वहां उपस्थित शास्त्री यह सोच रहे थे कि वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है। उसने कैसे जाना कि वे क्या सोच रहे थे। मरकुस के सुसमाचार में हम पढ़ते हैं:

> यीशु ने तुरन्त *अपनी आत्मा में जान लिया,* कि वे अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, ''तुम अपने अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो। (मर. 2:8, पर बल दिया गया है)।

जो वे सोच रहे थे यीशु ने उसे अपनी आत्मा में जान लिया था। यदि हम अपनी आत्मा के प्रति संवेदनशील होंगे तो हम यह भी जान सकते हैं, कि जो परमेश्वर के कार्य के विरुद्ध हैं, हमें उन्हें कैसे जवाब देना है।

पौलुस की सेवकाई में आत्मा का नेतृत्व

The Spirit's Leading in the Ministry of Paul

कम से कम बीस वर्ष तक सेवकाई में सेवा करने के पश्चात्, प्रेरित पौलुस ने यह अच्छी तरह से सीख लिया था कि पवित्र आत्मा के नेतृत्व में कैसे चलना है। उसकी भावी सेवकाई के संबंध में, कुछ मात्रा तक आत्मा ने उसे ''आने वाली चीज़ों'' को दिखाया। उदाहरण के लिए, जिस समय पौलुस इफिसुस में अपनी सेवकाई का समापन करने को था, तब उसकी धारणा अपने जीवन और सेवकाई के लिए अगले तीन वर्ष तक जारी रखने की थी।

> जब ये बातें हो चुकी, तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरुशलेम को जाऊं, और कहा, कि ''वहां जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है'' (प्रेरित. 19:21)।

ध्यान दें कि पौलुस ने इस बात को अपने *मन* में नहीं ठाना था बल्कि अपनी *आत्मा* में। यह संकेत देता है कि पवित्र आत्म पहले उसकी मकिदुनिया और अखाया की ओर जाने में अगुवाई कर रहा था। (दोनों ही आधुनिक दिनों के यूनान में स्थित हैं) इसके बाद यरुशलेम की ओर, और उसके कई वर्ष पश्चात् रोम की ओर और उसने ठीक-ठीक वैसा ही अनुसरण किया। यदि आपके पास पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा और रोम की उसकी यात्रा को दिखाने वाला मानचित्र है तो आप इफिसुस से होकर (जहां से उसे आत्मा के द्वारा मार्ग को दिखाया गया था) मकदुनिया, अखाया से यरूशलेम तक और कई वर्ष पश्चात् रोम के मार्ग पर जा सकते हैं।

पौलुस ने मकिदुनिया और अखाया से होकर यात्रा की, तत्पश्चात् वह फिर से मकिदुनिया की ओर गया, अयेजिन समुद्र तक के चारों ओर घूमते हुए, और इसके पश्चात् उसने अयेजिन तट के एशिया माइनर की यात्रा करते समय में वह मिलेतुस नगर में रुका। वहां उसने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को बुलाया और अपने विदाई संदेश में उसने उनसे कहा–

> और अब देखो मैं *आत्मा में बन्धा हुआ* यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता कि वहाँ मुझ पर क्या बीतेगा केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं (प्रेरित. 20:22-23 पर बल दिया गया है)।

पौलुस ने कहा कि ''*आत्मा में बन्धा हुआ*'' था, जिसका अर्थ है कि उसकी आत्मा में एक धारण थी जो उसे यरूशलेम की ओर ले जा रही थी। यरूशलेम पहुँचने पर उसके पास इस बारे में कोई स्पष्ट चित्र नहीं था कि वहां क्या होगा, परन्तु उस ने बताया कि अपनी यात्रा के समय में वह जिन शहरों में रुका, पवित्र आत्मा ने यह गवाही दी कि बन्धन और क्लेश उसके लिये तैयार थे। पवित्र आत्मा ने उन बन्धनों और क्लेशों की ''गवाही'' कैसे दी जो यरूशलेम में उसकी प्रतीक्षा में थे?

दो उदाहरण
Two Examples

प्रेरितों के काम के इक्कीसवें अध्याय में, हम दो घटनाओं को पाते हैं जो इस प्रश्न का जवाब देती हैं। पहला उदाहरण पौलुस के सूर नगर के मिदेत्रियेनियन बंदरगाह पर उतरने का है:

> और चेलों को पाकर हम वहां सात दिन तक रहे, उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पांव न रखना (प्रेरित 21:4)।

इस एक पद के कारण कुछ टिप्पणीकर्त्ता यह परिणाम निकालते हैं कि यरूशलेम के मार्ग पर जारी रहने के द्वारा पौलुस ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। तथापि, प्रेरितों के काम पुस्तक में हमें दी गई जानकारी के आधार पर हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं। कहानी में आगे बढ़ने पर हम पर यह स्पष्ट हो जाएगा।

इसके अतिरिक्त सूर में शिष्य अत्मिक रूप से संवेदनशील होने के साथ-साथ यह भी जान गए थे कि यरूशलेम में संकट उसकी प्रतीक्षा में था। उन्होंने उसे वहां न जाने को विवश किया। नये नियम के विलियम अनुवाद के अनुसार, आत्मा द्वारा दी गई छाप के द्वारा वे पौलुस को लगातार यरूशलेम में पांव न रखने को चिताते रहे।

तथापि, शिष्यों को सूर में कोई सहायता नहीं मिली, क्योंकि उनकी चेतावनियों के बावजूद पौलुस यरूशलेम की अपनी यात्रा में जारी रहा।

यह हमें सिखाता है कि आत्मा द्वारा प्राप्त होने वाले प्रकाशनों में हमें अपनी स्वयं की व्याख्या को जोड़ना नहीं चाहिए। पौलुस यह पूरी तरह से जानता था कि क्लेश और संकट यरूशलेम में उसकी प्रतीक्षा में थे, लेकिन वह यह भी जानता था कि यह परमेश्वर की उसके लिए वहां जाने की इच्छा में था। यदि परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा हम पर कुछ प्रगट करता है, तो यह ज़रूरी नहीं कि हमें वहां जाकर इसे बताना है, और हमें इस बारे में भी सतर्क रहने की ज़रूरत है कि आत्मा ने हम पर जो प्रगट किया है उसमें अपनी व्याख्या को न जोड़ें।

कैसरिया में रुकना

Caesarea Stop Over

यरूशलेम की यात्रा में पौलुस का अगला ठहराव कैसरिया नगर था:

> जब हम वहां बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। उसने हमारे पास आकर पौलुस का पटुका लिया और अपने हाथ पांव बान्धकर कहा; ''पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्जातियों के हाथ में सौंपेंगे'' (प्रेरित. 21:10-11)।

यहां पौलुस के लिए गवाही देते हुए पवित्र आत्मा का एक और उदाहरण है कि ''बन्धन और क्लेश'' यरूशलेम में उसकी प्रतीक्षा में हैं। परन्तु ध्यान दें कि अगबुस ने यह नहीं कहा, ''इसी कारण परमेश्वर कहता है, 'यरूशलेम मत जा'।'' नहीं,

परमेश्वर पौलुस को यरूशलेम ले जा रहा था और उसे अगबुस द्वारा भविष्यवाणी किए गए बन्धनों और क्लेशों के लिए तैयार कर रहा था, जो उसकी प्रतीक्षा में थे। इस पर भी ध्यान दें कि अगबुस की भविष्यवाणी ने केवल उसकी पुष्टि की थी जिसे पौलुस महीनों पूर्व अपनी आत्मा में जानता था। हमें कभी भी ऐसी भविष्यवाणी के अनुसार नहीं चलना चाहिए जिसकी पुष्टि न की गई हो।

अगबुस की भविष्यवाणी को हम ''दर्शनीय मार्गदर्शन'' के रूप में देखेंगे, क्योंकि यह पौलुस की आत्मा में एक भीतरी छाप से अलग था। जब परमेश्वर ''दर्शनीय मार्गदर्शन'' देता है, जैसे एक दर्शन या एक श्रव्य आवाज़ को सुनना तो इसका कारण सामान्यता यह होता है कि परमेश्वर जानता है कि हमारा मार्ग सरल नहीं होगा। हमें दर्शनीय मार्गदर्शन के लिए अतिरिक्त आश्वासन की आवश्यकता होगी। पौलुस के संबंध में वह एक भीड़ के द्वारा मारा जाने वाला था और रोम की यात्रा करने से पूर्व उसे कई वर्ष कारावास में बिताने थे। तथापि, उस दर्शनीय मार्गदर्शन को प्राप्त करने के द्वारा वह इस सब में शान्ति को बनाए रख सका, यह जानते हुए कि परिणाम उसके पक्ष में ही होगा।

यदि आपको कोई दर्शनीय मार्गदर्शन नहीं मिलता तो आपको इस बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए कि आपको इसकी ज़रूरत है, क्योंकि परमेश्वर देखेगा कि यह आपको मिले। तथापि, हमें भीतरी गवाह के द्वारा अगुवाई पाने और संवेदनशील होने का प्रयास करना चाहिए।

जंजीरों में और परमेश्वर की इच्छा में

In Chains and in God's Will

पौलुस के यरूशलेम पहुंचने पर उसे पकड़कर बन्दी बना लिया गया। एक बार फिर से उसने यीशु के दर्शन के रूप में दर्शनीय मार्गदर्शन को प्राप्त किया:

> उसी रात प्रभु ने उसके (पौलुस के) पास आ खड़े होकर कहा, ''हे पौलुस, ढाढ़स बान्ध, क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी'' (प्रेरित. 23:11)।

ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा, ''पौलुस तुम यहां क्या कर रहे हो? मैंने तुम्हें यरूशलेम आने के विषय में चेतावनी देने का प्रयास किया था।'' नहीं, वास्तव में यीशु ने उस अगुवाई की पुष्टि की थी जिसे पौलुस ने अपनी आत्मा में महीनों पूर्व प्राप्त किया था। पौलुस यीशु की ओर से प्रमाणित करने को यरूशलेम में परमेश्वर के उद्देश्य का केन्द्र था। वह रोम में भी मसीह की घोषणा करने वाला था।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि पौलुस की मूल-बुलाहट का भाग न केवल यहूदियों

और अन्यजातियों के सम्मुख गवाही देने का था, बल्कि राजाओं के सामने भी (देखें प्रेरित. 9:15)। यरूशलेम की कैद में और बाद में कैसरिया में पौलुस को गवर्नर के लिए फेलिक्स, पोरसियस, फेस्तुस और राजा अग्रिप्पा ''जो लगभग मान गया था।'' के सम्मुख गवाही देने का अवसर मिला। अन्त में पौलुस को रोमी सम्राट के सम्मुख गवाही देने को रोम भेजा गया।

नीरो से मिलने के मार्ग पर

On the Way to See Nero

जिस समय पानी का जहाज़ पौलुस को इटली लेकर जा रहा था, पौलुस ने अपने आत्मा के प्रति संवेदनशील होते हुए परमेश्वर के मार्गदर्शन को एक बार फिर से प्राप्त किया। जिस समय जहाज़ का कप्तान और पायलट यह निर्धारित करने का प्रयास कर रहे थे कि उन्हें किस बंदरगाह पर रुकना चाहिए, क्रेते के द्वीप पर पौलुस को एक मार्गदर्शन मिला:

> जब बहुत दिन बीत गए, और जलयात्रा में जोखिम इसलिए होता था कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर समझाया कि ''हे सज्जनो, *मुझे ऐसा जान पड़ता है,* कि इस यात्रा में विपत्ति और बहुत हानि न केवल माल और जहाज़ की वरन हमारे प्राणों की भी होने वाली है'' (प्रेरित. 27:9-10, पर बल दिया गया है)।

जो कुछ घटने वाला था, पौलुस ने उसे पहले से ही *जान* लिया था। निस्संदेह उसका इस तरह से जान लेना आत्मा द्वारा दी गई एक छाप थी।

दुर्भाग्यवश, कप्तान ने पौलुस की नहीं सुनी और दूसरे बंदरगाह पर पहुंचने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप, दो सप्ताह तक जहाज़ एक भयंकर तूफान में फंसा रहा। स्थिति इतनी खतरनाक हो गई थी कि जहाज़ के कर्मचारी दूसरे दिन सामान को जहाज़ से बाहर फेंकने लगे और तीसरे दिन उन्होंने जहाज़ के सारे सामान को ही फेंक दिया। कुछ समय पश्चात्, पौलुस को आगामी मार्गदर्शन मिला।

> और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिये, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही। जब वे बहुत उपवास कर चुके, तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा; ''हे लोगो, चाहिये था कि तुम मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज़ खोलते और न यह विपत्ति और हानि उठाते। परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूँ, कि ढाढ़स बान्धों, क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज़ की। क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसके

> स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा, 'हे पौलुस, मत डर, तुझे कैसर, के सामने खड़ा होना आवश्यक है: और देख, परमेश्वर ने सबको जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।' इसलिए, हे सज्जनो ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूँ, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। परन्तु हमें किसी टापू पर जा कर टिकना होगा (प्रेरित. 27:20-26)।

मेरे विचार से यह संभव है कि परमेश्वर ने पौलुस को उसकी दुर्दशा की रोशनी में ''दर्शनीय मार्गदर्शन'' दिया। इस कठिन परीक्षा से अलग, पौलुस शीघ्र ही जहाज़ के टूटने का सामना करने वाला था। कुछ समय बाद ही उसे एक खतरनाक सांपें के द्वारा काटा जाना था (देखें 27:41-28:5)। आपको पहले से ही यह सूचित करने को सब चीज़ अच्छी होने वाली हैं, आपके पास एक स्वर्गदूत का होना अच्छा होगा।

व्यवहारिक सलाह

Some Practical Advice

पवित्र आत्मा के नेतृत्व के बोध और छाप को अपनी आस्था में देखना आरंभ करें। पहली बार आप इस तरह का विचार करने में गलतियां करेंगे कि पवित्र आत्मा आपका नेतृत्व कर रहा है जब कि वह नहीं करता, परन्तु ऐसा होना सामान्य है। निराश न हों; हौसला रखें।

यह शांत स्थान में समय बिताने में भी सहायता करता है। जब हम अन्य भाषा में प्रार्थना करते हैं तो हमारी आत्मा प्रार्थना कर रही होती है और हम स्वाभाविक रूप से अपनी आत्माओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। परमेश्वर के वचन को पढ़ने और उसका अध्ययन करने के द्वारा, हम अपनी आत्माओं के प्रति भी अधिक संवेदनशील हो जाते हैं क्योंकि परमेश्वर का वचन आत्मिक भोजन है।

जब परमेश्वर किसी निर्धारित दिशा की ओर आपका मार्गदर्शन करता है, उसका नेतृत्व धुंधला नहीं पड़ता। इसका अर्थ है कि आपको कुछ समय लगातार प्रार्थना करते हुए यह जानने में बिताना चाहिए कि यह *परमेश्वर* ही है जो आपका नेतृत्व कर रहा है न कि आपके स्वयं के विचार या भावनाएं। यदि किसी निश्चित दिशा के बारे में प्रार्थना करते हुए आपके मन में कोई शान्ति नहीं है तो जब तक आपको शांति न मिल जाए तब तक उस दिशा में न जाएं।

यदि आप प्रभावशाली मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं तो यह अच्छा है, लेकिन एक दर्शन को देखने या श्रव्य वाणी को सुनने पर ''*विश्वास*'' न करें। परमेश्वर इन माध्यमों के द्वारा हमारी अगुवाई करने की प्रतिज्ञा नहीं करता है। यद्यपि वह कई बार अपनी इच्छा में होकर ऐसा करता है तथापि, हम सदैव यह भरोसा कर सकते हैं कि वह भीतरी गवाही के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करेगा।

अन्ततः परमेश्वर जो आपसे कहता है उसमें कुछ और न जोड़ें। परमेश्वर आप पर आपके लिए भविष्य में तैयार की गई सेवकाई को प्रगट कर सकता है, लेकिन आपको यह मानना है कि उसकी पूर्ति का समय चाहे वर्षों पश्चात् का क्यों न हो आपको उसे सप्ताहों का मानना है। मैं इसे अनुभव से जानता हूं। गलत धारणा न बनाएं। पौलुस इस बारे में बहुत कम ही जानता था कि उसके भविष्य में क्या रखा है, लेकिन वह प्रत्येक चीज़ के बारे में नहीं जानता था, क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक चीज़ को प्रगट नहीं करता। परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वास में होकर लगातार चलते रहें।